सर्व जीवन कल्प संधि

हरिकथामृइतसार गुरुगळ
करुणदिंदापनितु पॆळुवे
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु

कृइतिरमण प्रद्युम्न वसुदॆ
वतेगळाहंकारत्रयदोळु
चतुरविंशति रूपदिंदलि भॊज्यनेनिसुवनु
हुतवहाआंतगत जया
पतियु तानॆ मूरधिक त्रिं
शति सुरूपदि भॊक्तृइ एनिसुव भॊक्तृइगळोळगिद्दु ०१

आरधिक मूवत्तु रूपदि
वारिजाप्तनॊळिरुतिहनु मा
यारमण श्रीवासुदॆवनु कालनामदलि
मूरु विध पितृगळॊळु वसु त्रिपु
रारि आदित्यगनिरुद्धनु
तॊरिकोळ्ळदे कथृकमक्रियनेनिसिकोम्ब ०२

स्ववश नारायणनु ता ष
ण्णवति नामदि करॆसुतलि वसु
शिव दिवाकर कथृकमक्रियगळोळगिध्धु
नेवनविल्लदे नित्यदलि त
न्नवरु माडुव सॆवे कैकों
डवर पितृगळिगीवनम्थानम्थ सुखगळनु ०३

तंतुपटदंददलि लकुमीकांत
पंचात्मकनेनिसि वसु
कंतुहर रवि कथृगळोळगिध्धनवरथ तन्न
चिंतिसुव संतरनु गुरु मध्

वांतरात्म संतयिसुवनु
संततखिळाथगळ पालिसि इहपरंगळलि ०४

तंदेताय्गळ प्रीतिगोसुग
निंद्यकमव तोरेदु विहितग
ळोंदु मीरदे संगकमगळाचरिसुववरु
वंदनीयरागिलेयोळगे दै
नंदिनदि दैशिक दहिक सुख
दिंद बाळवरु बहु दिवसदलि कीतियुतरागि ०५

अंशि अंशांतगत त्रय
हंसवाहन मुख्य दिविजर
संशदलि तिळिदंतरात्मक जनादनन
संस्मरण पूवकदि षडधिक
त्रिंशतित्रय रूपवरितु वि
पांसगन पूजिसुवरवरे कृथाठरेनिसुवरु ०६

मुरुवरे साविरद मेलरे
नूरेदु रूपदि जनादन
सूरिगळु माडुव समाराधनेगे विघ्नगळु
बारदंते बहुप्रकार ख
रारि कापाडुवनु सवश
रीरगळोळिद्दवरवर पेसरिंद करेसुतलि ०७

जय जय जयाकांत दत्ता
त्रेय कपिल महिदास भक्त
प्रिय पुरातन पुरुष पूणानम्ध ज्झन्यानघन
हयवदन हरि हंस लोक
त्रय विलअण निखिळजगदा
श्रय निरामय दयदि संतैसेंदु प्राथिपुदु ०८

षण्णवति येंबअॅरेढ्यनु
षण्णवति नामदलि करेसुत
तन्नवरु सद्भक्ति पूवकदिंद माडुतिह
पुण्यकमव स्वीकरिसि का
रुण्य सागर सलहुवनु ब्र
ह्मण्य दॅव भवाब्धिपॊत बहु प्रकारदलि ०९

दॅहगळनु कोडुववनु अवरव
राहरवनु कोडदिहने सुमनस
महित मंगळ चरित सद्गुणभरितननवरत
अहिक पारत्रिक सुखप्रद
वहिसि बेन्नलि बेत्तवमृथव
द्रुहिण मोदलादवरिगुणिसिद मुरिदनहितरनु १०

द्रुहिण मोदलादमररिगे स
न्महित मायारमण तानॅ
स्वहनेनिसि सम्थृप्थिपदिसुव सवकालदलि
प्रहित संकरुषनु पिथृगळि
गहरनेनिप स्वधाख्यरूपदि
महिज फलथृण पेसरिनलि प्रद्युम्ननिरुद्ध ११

अन्ननेनिसुव नृपशुगळिगे
हिरण्य गभांडदोळु संतत
तन्ननीपरियिंदुपासनेगैव भक्तरन
बन्न पडिसदे भवसमुद्रम
हॉन्नतिय दाटिसि चतुविध
अन्नमयनात्मप्रद₹हन सुखवनीव हरि १२

मनवचन कायगळ देशेयिं
दनुदिनदि बिडदाचरिसुति
प्पनुचितोचित कमगळ सद्भक्तिपूवकदि

अनिलदेवनोळिप्प नारा
यणगिदन्नवु एंदु कृष्णा
पणवेनुत कोडे स्वीकरिसि संतैप करुणाळु १३

ऐळु विधदन्न प्रकरणव
केळि कोविदरास्यदिंदलि
आलसव माडदले अनिरुद्धादि रूपगळ
कालकालदि नेनेदु पूजिसु
स्थूलमतिगळिगिदनु पेळदे
श्रीलकुमिवल्लभने अन्नादन्न अन्नदनु १४

एंदरिदु सप्तान्नगळ दै
नंदिनदि मरेयदे सदा गो
विंदगपिसु निभयदि महयज्ञ्न्यविधुयेम्धु
इंदिरेशनु स्वीकरिसि दय
दिंद बेडिसिकोळदे तवकदि
तंदुकोडुवनु परममंगळ तन्न दासरिगे १५

सूजि करदलि पिडिदु समरव
ना जयिसुवेनु एंब नरनं
ती जगत्तिनोळुळ्ळ अज्ञ्न्यानिगळु नित्यदलि
श्री जगत्पतिचरणयुगळ
सरोज भक्थिज्ञ्न्यानपुवक
पूजिसदे धमाहकामव बयसि बळलुवरु १६

शकटभंजन सकलजीवर
निकटगनु तानागि लोकके
प्रकटनागदे सकलकमव माडि माडिसुत
अकुटिलात्मक भकुत जनरिगे
सुखदनेनिसुव सवकालदि
अकटकट ईतन महामहिमेगळिगेनेंबे १७

श्रीलकुमिवल्लभनु वैकुं
ठालयदि प्रणव प्रकृथि की
लालजासन मुख्य चॆतनरॊळगॆ नॆलॆसिद्दु
मूलकारण अंशनामदि
लीलॆगैसुत तॊरिकॊळ्ळदॆ
पालिनॊळु घृथविध्ध तॆरॆदंतिप्प त्रिस्थळदि १८

मूरु युगदलि मूलरूपनु
सूरिगळ संतयिसि दितिय कु
मारकर संहरिसि धमवनुळुहबॆकॆंदु
कारुणिक भूमियॊळु निजपरि
वारसहितवतरिसि बहुविध
तॊरिदनु नरवथ्प्रवृथ्थिय सकल चॆतनकॆ १९

कारणाव्हय प्रकृथियॊळगि
ध्धारधिक हदिनॆंटु तत्वव
ता रचिसि तद्रूप तन्नामंगळने धरिसि
नीरजभवांडवनु निमिसि
कारुणिक कायाख्यरूपदि
तॊरुवनु सहजाहिताचलगळलि प्रतिदिनदि २०

जीवरंतयामि अंशि क
ळॆवरगळॊळगिंद्रियगळलि
ता विहार गैवुतनुदिन अंशनामदलि
ई विषयगळनुंडु सुखमय
ईव सुख संसारदु:खव
दॆव मानव दानवरिगविरत सुधामसख २१

दॆश दॆशव सुत्ति दॆहा
यासगॊळिसदॆ काम्यकम दु

राशेगोळगागदले ब्रह्माद्यखिळचेतनरु
भू सलिलपावकसमीरा
काश मोदलादखिळ तत्त्व प
रेशगिवधिष्ठानवेंदरितचिसनवरत २२

एरडु विधदलि लोकदोळु जी
वरुगळिप्परु संतत क्षराक्षर
विलिंग सलिंग सृज्यासृज्य भेददलि
करेसुवुदु जदप्रकृथि प्रणवा
अर महादणुकालनामदि
हरि सहित भेदगळ पंचक स्मरिसु सवत्र २३

जीव जीवर भेद जड जड
जीव जडगळ भेद परमनु
जीव जड सुविलअणनु एंदरिदु नित्यदलि
ई विरिंचांडदोळु एल्ला
ठाविनलि तिळिदैदु भेद क
ळेवरदोळरितच्युतन पदयैदु शीघ्रदलि २४

आदियलि अराअराख्य
द्वेध अअरदोळु रमा मधु
सूदनरु अरगळोळु प्रक्इति प्रणव कालगळु
वेध मुख्य थृणाम्थ जीवर
भेदगळनरिती रहस्यव
बोधिसदे मंदरिगे सवत्रदलि चिंतिपुदु २५

दीपदिं दीपगळु पोरम
ट्टापणालयगत तिमिरगळ
ता परिहारगैसि तद्गतपदाथ तोपंते
सौपरणिवरवहन ता बहु
रूपनामदि एल्ल कडेयलि

व्यापिसिद्दु यथेष्टमहिमेय तोप तिळिसदले २६

नळिनमित्रगे इंद्रधनु प्रति
फलिसुवंते जगत्रयवु कं
गोळिपुदनुपाधियलि प्रतिबिंबाव्हयदि हरिगे
तिळियॆ त्रिककुद्धामनति मं
गळ सुरूपव सवठाविलि
पोळेव हृधयके प्रितिदिवस प्रह्लादपोषकनु २७

रसविशेषदोळति विमल सित
वसन तोयिसि अग्रियोळगिडे
पसरिसुवुदु प्रकाश नसुगुंददले सवत्र
त्रिशिरदूषणवैरि भक्तिसु
रसदि तोय्द महात्मरनु बा
धिसवु भवदोळगिद्दरेयु सरि दुरितरासिगळु २८

वारिधियोळगखिळ नदिगळु
बेरेबेरे निरंतरदलि वि
हार गैवुत परम मोददलिप्प तेरनंते
मूरु गुणनगळ मानियेनिसुव
श्रीरमारूपगळु हरियलि
तोरुतिप्पवु सवकालदि समरहितवेनिसि २९

कोकनद सखनुदय घूका
लोकनके सोगसदिरे भास्कर
ता कळंकने ई कृथिपथि जगन्नाथनिरे
स्वीकरिसि सुखबडलरियदवि
वेकिगळु निंदिसिदरेनहु
दी कवित्वव केळि सुखबडदिहरे कोविदरु ३०

चेतनाचेतनगळलि गुरु

मातरिश्वांतगत जग
न्नाथ विठल निरंतरदि व्यापिसि तिळिसिकोळदे
कातुरव पुट्टिसि विषयदलि
यातुधानर मोहिसुव नि
भीत नित्यानंदमय निर्दोष निरवद्य ३१